પુષ્ટિ-સિદ્ધાંત ચિંતન

ડો. જયેન્દ્ર સોની

પુષ્ટિ-સિદ્ધાંત ચિંતન

(*"પુષ્ટિ-સિદ્ધાંત ચિંતન"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१)

****

'वाणी' अने तेनो 'अर्थ' बन्ने आपसमां जोडायेला होय छे. तदर्थ श्री महाप्रभुजी ना ग्रंथ अने तेना अर्थ रुप श्रीकृष्ण वच्चे गाढ संबंध थे. 'प्रमेय' रुप श्रीकृष्ण ना स्वरुप ने समजवा माटे 'प्रमाण' नीअपेक्षा रहे. प्रमाण ना असंदिग्ध बोध माटे कोई एक प्रमाण न चाले, परंतु अनेक प्रमाणोनी एकवाक्यता होवी जरुरी छे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी प्रमेय - अर्थात् ब्रह्म ने समजाववा निबंध ग्रंथ ना प्रथम शास्त्रार्थ प्रकरणमां खुलासो करतां कहे छे - "वेदा: श्रीकृष्ण वाक्यानि व्यास सूत्राणि चैव हि, समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम्", अर्थात् वेद, गीता, ब्रह्मसूत्र अने भागवत, ए चार प्रमाणो नी एकवाक्यता ना आधारे पोते प्रमेय ना स्वरुपने समजावी रह्या छे. ए चार प्रमाणो ना क्रम विशे पण तेमणे स्पष्टता करी छे के वेदवचनमां जे वात स्पष्ट न थाय ते गीता मांथी समजाय, गीतानी वातनो खुलासो ब्रह्मसूत्र मांथी मले, अने तेमां जो स्पष्टता न थाय तो भागवत सर्वसंदेहवारक शास्त्र होवाथी तेनुं अवगाहन करवाथी प्रत्येक बाबत सुस्पष्ट थई जाय छे. तेरी चारेय शास्त्रोनी एकवाक्यता प्रमाण छे.

उपरोक्त वातने लक्षमां राखी श्रीमहाप्रभुजीए पोताना ग्रंथों नी रचना करी छे. तेथी तेमना सर्वे ग्रंथों नुं तात्पर्य "श्रीकृष्ण" ज होय छे. एटले के तेमना ग्रंथ रुप वाणी नो अर्थ मात्र "श्रीकृष्ण" थाय छे , ते स्पष्टपणे समजवुं जोईए.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो.श्री श्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (२)

****

शब्द - मंत्री - देव

''

वाणी अने तेनो अर्थ जोडायेल छे, तेम 'शब्द' अने तेना 'अर्थ' नो संबंध छे. ज्यारे आपणे शब्द नी साथे तेनो अर्थ जाणीये त्यारे ते 'मंत्र' कहेवाय. कोई मंत्रनुं शब्दरुप ते मंत्र ना अधिष्ठाता देवनो भौतिक देह छे. मंत्र नी फलदायीता त्यारे बने ज्यारे तेना 'शब्द' अने 'अर्थ' बन्ने धारण करवामां आवे. अर्थात् ज्यारे शब्द ने अर्थ सहित जाणिये, त्यारे शब्द ने 'मंत्र' कहेवाय अने तेनो 'अर्थ' ते मंत्रनो अधिष्ठाता देव.

आम मंत्र ना शब्द अने तेना अर्थ बन्नेनुं 'आधिदैविक स्वरुप' ज्यारे प्रकट थाय, त्यारे ते मात्र शब्द न रहेतां 'मंत्र' बनी जाय छे, अने तेनो अर्थ 'देव' बनी जाय, अन्यथा तेनी फलदायीता न रहे.

आपणे 'अष्टाक्षर' नुं रटण करीए, परंतु जो तेना अर्थ ने एटले तेना मर्मने धारण अर्थात् आत्मसात न करीए तो ते मात्र 'शब्द' नुं ज रटण करतां होईए छीए. तेनुं मंत्रात्मक स्वरुप तो त्यारे बने, ज्यारे तेनो अर्थ समजीने ते रटवामां आवे, अने त्यारे ते मंत्र रुप धारण करे, तेनो अधिष्ठाता देव तेमां प्रकट थाय, जे मंत्र नुं फल आपे. अन्यथा तो आपणे केवल शब्दोच्चार करतां होईए. न तेने मंत्र कहेवाय, न ते फलदाई बने. आज वात 'ब्रह्मसंबध मंत्र' के कोईपण मंत्र ना जपने लागु पडे छे. तेनी मंत्र रुपता त्यारेज प्रकट थाय ज्यारे आपणे तेना अर्थ ने धारण करीए. अन्यथा तो ते शब्द मात्र रही जाय. माटे मंत्र जाप करीए त्यारे आ बाबत समजवी जरुरी छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्री श्या. म जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (३)

****

कोई पण मंत्र नो अर्थ तेना अधिष्टाता देव छे. तेम वेद मंत्र रुप छे, ज्यारे वेद नो अर्थ 'ब्रह्म' देव रुप छे. माटे भगवान गीता मां कहे छे - "वेदैश्च सर्वे: अहमेव वेद्यो वेदांतकृत वेद विदेह च अहम्" (१५/१५). अर्थात् वेद ना द्वारा वेद्य एटले के 'वेदनो अर्थ, वेद द्वारा जेने जाणी शकाय ते हुं छुं'. आम वेद मां जेटला मंत्रों छे, तेना देवता भगवान श्रीकृष्ण छे.

तदर्थ, वेद ना विस्तार रुप स्मृति, पुराण मां पण जे नामों आपवामां आव्या छे, तेना अर्थ श्रीकृष्ण ज छे. आ वात नो खुलासो करवा श्रीमहाप्रभुजी निबंधना शास्त्रार्थ प्रकरणमां कहे छे - "वेदांते च स्मृतौ ब्रह्मलिंगं भागवते तथा 'ब्रह्मे'ति, 'परमात्मे' ति 'भगवान' इति शब्द्यते". अर्थात् वेद मां जे वेद्य छे तेने 'ब्रह्म' कह्या छे, तेनेज गीता आदि स्मृति मां 'परमात्मा' कह्या छे, अने भागवत आदि पुराणों मां 'भगवान' कह्या छे. आ त्रणेय नामों नो तात्विक अर्थ एकज छे, मात्र संदर्भ जुदा जुदा छे. भागवत कहे छे - "कृष्ण स्तु भगवान स्वयं". तेथी गीता-वचन "वेदेश्च सर्वे: अहमेव वेद्यो" सार्थक जणाय छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)
(संदर्भ गो. श्री श्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (४)

****

श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा के छे - वेद (श्रुति) नो अर्थ छे 'ब्रह्म', गीता (स्मृति) नो अर्थ छे 'परमात्मा', भागवत (पुराण) नो अर्थ छे 'भगवान'. ए सिवाय जे 'अष्टाक्षर' के 'पंचाक्षर' मंत्र छे, तेना पण विशिष्ट अर्थ छे. अष्टाक्षर नो अर्थ छे - 'भगवाननुं महात्म्यज्ञान', कारणके तेमां 'शरणागति' नो भाव रहेलो छे. तेवीज रीते पंचाक्षर नो अर्थ छे 'भगवान प्रति समर्पण'.

जो आपणे 'ब्रह्मसंबंध मंत्र' लीधो छे तो तेनो अर्थ छे - आपणु सेव्य स्वरुप, जेमनी आपणे सेवा करीए छीए. ज्यारे आपणे आपणा श्रीठाकोरजी सन्मुख निवेदन (ब्रह्म संबंध) मंत्र बोलीए छीए त्यारे कहीये छीए - "हे कृष्ण हुं तारो छुं". आ शब्दो आपणे आपणा सेव्य स्वरुप आगल बोलीए छीए अर्थात् आपणा कृष्ण ने कहीए छीए, जेने आपणे भजीए छीए, जेनी आपणे सेवा करीए छीए, नहीं के सर्व व्यापि ब्रह्म के सृष्टिनुं

संचालन / नियमन करनार परमात्मा ने !

आपणे ज्यारै अष्टाक्षर के पंचाक्षर मंत्र बोलीए तो तेनी सार्थकता त्यारेज बने ज्यारे ए मंत्र ना अर्थने जाणिये, विचारिये, अने एनो अर्थ छे - आपणु 'सेव्य स्वरुप'. ते छे आपणा द्‌वारा बोलाता मंत ना अधिष्ठाता. जो आ अर्थ आपणे न स्वीकारीए तो ते मंत्र ज नथी रही जता, ते मात्र बोलाता शब्दों ज छे ! अने जो आपणे ब्रह्मसंबंध कर्या पछी सेवा ज न पधरावी होय तो !

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - श्री श्या.म. जी)

"पुष्टि-सिद्‌धांत चिंतन" (५)

****

मंत्र अने मंत्र ना अधिदेव साथेना संबंध ने जाणीए तो मंत्र नी देवात्मक्ता अने तेनी फलदायिता समझी शकाय. श्रीमहाप्रभुजी समझावे छे तेम श्रुति, स्मृति, अने भागवत नो अर्थ अनुक्रमे ब्रह्म, परमात्मा अने भगवान छे. तेवीज रीते आप ना मते अष्टाक्षर अने पंचाक्षर मंत्र नो अर्थ आपणा सेव्य-स्वरुप श्रीठाकोरजी छे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी अमुक सेवकोने सेवार्थे ब्रह्मसंबंध मंत्र लखीने पधरावी देता हतां, अर्थात् ते मंत्र स्पष्टरुपे 'देव' ज छे, एटले देव मंत्रात्मक छे.

आपणे जोईए छीए के मर्यादामार्गमां मंत्र द्‌वारा प्राण प्रतिष्ठा करवामां आवे छे. तेमज पुष्टिमार्गमां भावात्मक रीते श्रीठाकोरजीने पुष्ट करतां वेद, गीता, भागवत नाम मंत्रों नो उच्चारण करवामां आवे छे. भागवत (१०.५.२२) अनुसार मंत्र बोलीने स्वरुपंना प्रत्येक अंग नो स्पर्श करवामां आवे छे. तेथी समझी शकाय छे के स्वरुप मंत्रात्मक छे अने मंत्र देवात्मक छे. ते बन्ने परस्पर जोडायेल छे, जेवी रीते वाणी अने तेनो अर्थ जोडायैल छे.

श्रीमहाप्रभुजी 'अष्टाक्षर मंत्र'ने प्रभुना माहात्म्य ,साथे ओडायेल माने छे, तेना द्‌वारा आपणे प्रभुनी शरणागति स्वीकारीए छीए, अने 'ब्रह्मसंबंध मंत्र' साथे आपणो प्रभु प्रत्येनो स्नेह जोडायेल छे. तेनो मतलब ए के अष्टाक्षर द्‌वारा आपणे भगवान साथे 'शरण' अने 'शरणागत' ना भावथी जोडायेला छीए अने 'ब्रह्मसंबंध करती वखते "दासोंहं" कहीये त्यारे भगवान साथे 'स्वामी' आने 'सेवक' नो संबंध जोडाय छे.

आ चीते मंत्रोच्चार द्‌वारा आपणे भगवान साथे व्यक्तिगत संबंध स्थापित करीए छीए.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्री श्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्‌धांत चिंतन" (६)

****

विशिष्ट शब्द थी व्यक्तिगत संबंध स्थापित थाय छे. जेवीरीते कोईने 'काका' कहीये त्यारे आपणो तेमनी साथे भत्रीजानो संबंध स्थापित थाय छे. तेवी वात पति-पत्नी ना संबंध नी छे. जेने पत्नी न होय ते पुरुषने 'पति' न कहेवाय. पति शब्द पत्नी ना संदर्भ मां छे. बधा पुरुष पति के काका न होय. तेमनी पत्नी के भत्रीजा ना संदर्भ मां ते पति के काका कहेवाय छे.

ज्यारे आपणे अष्टाक्षर मंत्र नो उच्चार करीए छीए त्यारे आपणो 'कृष्ण' साथे 'शरण' आने 'शरणागत' नो

संबंध स्पष्ट थाय छे. "श्रीकृष्ण शरणं मम" नो अर्थ थाय - श्रीकृष्ण मारा रक्षक छे. तेवीज रीते 'दासोहं' बोलीये त्यारे आपणो श्रीकृष्ण ने 'स्वामी' रुपे स्वीकारवानो भाव प्रकट थाय छे. पंचाक्षर मंत्र द्वारा श्री कृष्ण आपणा स्वामी होवानी आपणे कबुलात करीए छीए.

आवीज हकीकत वेद मंत्र ना अर्थ रुप 'ब्रह्म' शब्द, गीता मंत्र ना अर्थ रुप 'परमात्मा' शब्द अने भागवत मंत्र ना अर्थ रुप 'भगवान' शब्द नी छे. वास्तवमां त्रणेय शब्दो 'परम तत्त्व' परक ज थे, जेम काका, मामा, पति वगेरे शब्दो कोई 'माणस' ना माटे ज छे, परंतु जुदा जुदा संदर्भ मां तेना अर्थ थाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्री श्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (७)

****

वेद मां 'परम तत्त्व' ने 'ब्रह्म' कह्या छे. ब्रह्म नो अर्थ छे 'जे सर्व व्याप्त छे'. सृष्टि मां जे कांई छे ते बधु ब्रह्म मां समाहित छे. तेनी बहार कशुं ज नथी. जो आपणे एम कहीये के ब्रह्म अमुक सिवाय बधुं छे, तो ते ब्रह्म ज न कहेवाय. सृष्टि मां अस्तित्व धरावनार प्रत्येक वस्तु ब्रह्म नुंज रुप छे.

तेथी ज ते 'परम तत्त्व' ने माटे श्रुति कहे छे - "एकमेवाद्वितियम्". ते एक मात्र अने अद्वितीय छे. तेना सिवाय सृष्टि मां अन्य कशुं अस्तित्व धरावतुं नथी. जे आ सर्व कांई बन्यो छे तेनुं नाम ज ब्रह्म छे. जेवीरीते सोनानी लगडीमांथी विभिन्न दागीना - एरिंग, विंटी, बंगडी वगेरे बनाववामां आवे तो ते एकबीजाथी भिन्न होवा छतां ते बधा दागिना मूलत: सोनु ज छे.

तेवीज रीते सृष्टि मां देखाती जड़-चेतन बधी वस्तुओ एकबीजाथी भिन्न होवा छतां ते बधाज नाम अने रुप ब्रह्म नाज छे. कोईज पदार्थ ब्रह्म थी भिन्न नथी, अर्थात् ब्रह्म न होय तेवुं कांईज अस्तित्व धरावतुं नथी. आ ज श्रीमहाप्रभुजीना 'ब्रह्मवाद' ना सिद्धांत नुं मूल छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो.श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (८)

****

तदनुसार स्मृति ग्रंथ 'गीता' पण एक मंत्र छे, जेना देव छे 'परमात्मा'. गीतामां 'परम तत्त्व' माटे 'परमात्मा' शब्द प्रयोग करवामां आव्यो छे. सृष्टिमां भगवद् अंश रुप अनंत आत्माओ छे, जेने आपणे 'जीवात्मा' कहीये छीए. ते सौमां विद्यमान एक परम आत्मा अर्थात् 'परमात्मा' छे. जेम 'काका' शब्द कहेतां 'भत्रीजा' नो बोध थाय छे, जेम परमात्मा कहेता आत्मा नो बोध थाय छे. आम 'परम तत्व' ने ज्यारे 'आत्मा' ना संदर्भ मां विचारीए त्यारे तेने 'ब्रह्म' न कहेतां 'परमात्मा' शब्द थी संबोधवामां आवे छे. ब्रह्म सर्वव्यापी छे, परमात्मा आत्मा साथे जोडायेल छे. तेम छतां ब्रह्म अने परमात्मा मां तत्वत: कोई भेद नथी.

सृष्टि मां परमात्मा 'व्यष्टि अंतर्यामी' रुपे प्रत्येक जीवात्मा साथे साक्षीवत् रहेल छे, ज्यारे ते 'समष्टि अंतर्यामी' स्वरुपे समग्र सृष्टि नुं नियमन - संचालन करे छे. परमात्मा ने साक्षी मानवाथी कोई 'पाप' करतां आपणे विचारीये के परमात्मा बधुं जुए छे, माटे पाप न करवुं जोईए. सत्कर्म करतां पण परमात्मानी

प्रसन्नता माटे करीए छीए तेवो अहेसास थाय छे. जीवात्मा ना सत्कर्म, सद्भाव, सद्विचार मां परमात्मा नी अनुभूति थाय छे, ते व्यापक अनुभूति नथी होती परंतु व्यक्तिगत अनुभूति होय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो.श्री श्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (९)

****

श्रुति (वेद) अने स्मृति (गीता) उपरांत श्रीमहाप्रभुजीए 'भागवत महापुराण ने पण प्रमाण रुप स्वीकार्यु छे. भागवत मंत्र नो देव 'भगवान' छे. तेमां 'परम तत्व' माटे ब्रह्म के परमात्मा न कहेतां 'भगवान' शब्द प्रयोग कर्यो छे. जे कोई परमात्मा नुं भजन करे तेने 'भक्त' कहेवाय, अने ते जेने भजी रह्यो होय ते भजनीयने 'भगवान' कहेवाय.

आम 'भक्त' ना संदर्भ मां 'परम तत्त्व' ने 'भगवान' शब्द थी संबोधवामां आवे छे. भगवान नो अर्थ छे - 'भग' वाला अर्थात् जेमनामां ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान अने वैराग्य एवा छ दिव्य गुणो रहेला छे. भक्त अने भगवान ने जोडती कडी छे - 'भजन' अथवा 'भक्ति'. तेना द्वारा भक्त भगवान सुधी पहोंची शके छे. जो भक्त भजन एटलेके भक्ति न करे तो तेनो भगवान साथे संबंध स्थापित थई शके नहीं.

आ रीते 'परम तत्त्व' माटे भगवान शब्द ना प्रयोग थी भक्त साथे तेमनो व्यक्तिगत संबंध स्पष्ट थाय छे, जेवीरीते कोई माणसने 'काका' कहेवाथी आपणे तेना भत्रीजा होवानी ओलख उभी थाय छे.

कोई भजन करे अथवा न करे, तो पण 'परम तत्त्व' ब्रह्म के परमात्मा तो छेज, परंतु ज्यारे कोई भक्त तेनुं भजन करे त्यारे ये 'भगवान' कहेवाय छे.

आ रीते श्रीमहाप्रभुजीए ब्रह्म, परमात्मा अने भगवान शब्दोना भेद समजाव्या छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१०)

****

श्रीमहाप्रभुजी 'सर्वनिर्णय-निबंध' मां कहे छे- "प्रेम्णान्वत् साधनं लोके नास्ति मुख्यं परं महत्, श्रीभागवतमेव अत्र परं तस्य हि साधनम्" (३२६). अर्थात् लोकमां (भगवद्) प्रेम थी विशेष अन्य कोई साधन नथी अने भगवान ना विषयमां निर्धार करनारुं, भगवानना सर्व माहात्म्यने प्रकट करनारुं, तेमना प्रत्ये प्रेम (भक्ति) प्रकटावनारुं श्रीमद् भागवत शास्त्र छे, अर्थात् 'परम तत्त्व'ने 'भगवान' रुपे ओलखावनार भागवत शास्त्र छे.

आपणे जोयु तेम 'परमात्मा' आत्मा ना संदर्भ मां कहेवातुं 'परम तत्त्व' नुं नाम छे. ज्यारे 'ब्रह्म' शब्द नो प्रयोग करीए त्यारे जगतना प्रत्येक रुप अने नाम तेना छे. ते अर्थमां देव अने राक्षस बन्ने ते ज छे. राम अने रावण बन्ने तेना ज रुपो छे. आम ब्रह्म ना स्तर पर राम अने रावणमां भेद नथी, पऱंतु परमात्मा नो विचार करीए त्यारे आत्मा अने परमात्मा मां भेद उत्पन्न थाय छे. जो आपणे रावणने बदले राम अने विभिषण नो विचार करीए त्यारे एक 'भगवान' छे अने बीजो 'भक्त' छे,केमके विभिषण रामने भजे छे. आम भगवान ना स्तरे बन्ने एक नथी.

ब्रह्म स्वरूप रामने कोई 'भजे' त्यारे ते 'भगवान' रुपे भक्तने प्रतिसाद आपे छे.

आ रीते 'परम तत्त्व' माटे जुदा जुदा शब्दों थी तेना संदर्भ मां अर्थ बदलाई जता होय छे. आ सुक्ष्म भेद जाणवो एटला माटे जरुरी छे के श्रीमहाप्रभुजी 'कृष्ण' ने 'परब्रह्म' बतावी तेमनी सेवा नो उपदेश आपे छे, तेनुं तात्पर्य समजी शकाय.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो.श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (११)

****

८४ वैष्णव नी वार्तामां गदाधरदासजी नो प्रसंग आवे छे. तेमना काका शैव पंथी पंडित हतां. एक समय गदाधरदासने लई तेओ प्रयागमां श्रीमहाप्रभुजी पासे आव्या अने आपश्रीने प्रश्न कर्योके "ठाकोरजी तो बधा एक छे, परंतु वैष्णव संप्रदाय मां शा माटे बधाने जुदा जुदा माने छे ? कोई 'कृष्ण' ने कोई 'राम' ने. कोई 'नृसिंह' वगेरेने तो कोई 'नारायण' आदिने ! आ बधामां 'ठाकोरजी' कोण ?"

श्रीमहाप्रभुजीए जवाब आप्यो के - "जेवीरीते चक्रवर्ती राजानुं राज्य समग्र पृथ्वी पर होय अने प्रत्येक देश - गाम ना पण राजा होय, तेओ पण 'राजा' ज कहेवाय, परंतु ते बधा चक्रवर्ती राजाना आज्ञाकारी होय. तेवी रीते पूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्ण सर्वोपरी छे अने बीजा अवतारो तेमना अंश-कला रुप विभुतिओ छे. ते सर्वे श्रीकृष्ण ना आज्ञाकारी छे".

तेथीज श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के बधा देव 'देव' तो छे, जेटला पण प्रभुना रुप छे, ते बधा ठाकोरजी तो छे, परंतु श्रीकृष्ण चक्रवर्ती छे - तेे बधा ठाकोरजीना. श्रीकृष्ण मात्र 'देव' नथी, परंतु "देवाधिदेव" छे.

आ वात समजाववा माटे ज श्रीमहाप्रभुजीए ब्रह्म-परमात्मा-भगवान नी एकरुपता अने तेमां तारतम्य नो खुलासो कर्यो छे. जेने वेद मां 'ब्रह्म' कह्या छे, तेने गीता मां 'परमात्मा' कह्या छे, अने भागवत मां 'भगवान' कह्या छे, जे भागवत नो देव छे, तेे 'भगवान कृष्ण' छे. अर्थात् वेद नो देव ब्रह्म ते ज श्रीकृष्ण छे.

भागवत कहे छेे - "एते चांश कला पुंस कृष्णस्तु भगवान स्वयं". अर्थात् बधा अवतारो अंश कला रुप छे, मात्र 'कृष्ण' स्वयं भगवान छे. तेओ अवतार नथी, 'अवतारी' छे. माटे ज श्रीमहाप्रभुजी सिद्धांत मुकतावली ग्रंथ मां कहे छे - "परं ब्रह्म तु कृष्णो ही" - कृष्ण ज परब्रह्म छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो.श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१२)

****

भगवान श्रीकृष्ण चक्रवर्ती रुप 'देवाधिदेव' होवानी निर्णायक रजुआत श्रीमहाप्रभुजी तेमना निबंध ग्रंथ ना शास्त्रार्थ प्रकरणमां श्रीजगन्नाथजी नाम वचन नो उल्लेख करतां कहे छे - "एकं शास्त्रम् देवकी पुत्र गीतं एको देवो देवकी पुत्र एवं, मंत्रोप्येकं तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा". आपश्री आ भगवद् वाणीने आधारे 'गीता' ने एक मात्र अर्थात् 'मुख्य शास्त्र' तरीके प्रतिपादित करे छे. तेमां स्पष्टतया बताव्यु

छे के 'कृष्ण' 'मुख्य देव' छे.

भागवत मां अवतारी कृष्ण ना चोविस अवतारों वर्णववामां आव्या छे. वेद मां तो कहे छे - "अजायमानो बहुधा विजायते तस्य धीरा: परिजानन्ति योनि मरीचीनाम् पदम् इच्छन्ति वेधस:". अर्थात् ते 'अजन्मा' छे छतां अनेकवार अनेक प्रकारे जन्म ले छे. सृष्टि मां विद्यमान बधा ज रुप ब्रह्म ना ज छे. ये बधामां तेनी ब्रह्मरूपता प्रकट थाय छे, कृष्ण रुपता प्रकट थती नथी.

परंतु भगवान श्रीकृष्ण गीता मां स्पष्टता करे छे के "वेदेश्च सर्वे: अहमेव वेद्य:". (गीता १५/१५). अर्थात् समग्र वेद मारू ज प्रतिपादन करे छे. आ वातनी प्रतीति श्रीकृष्णे पोताना विराट स्वरुप मां अर्जुनने करावी हती. अर्थात् समग्र सृष्टि मां श्रीकृष्ण समाहित छे, श्रीकृष्ण ज परब्रह्म छे.

आम वेद ना मंत्रो नो अर्थ / नाम, गीता ना बधा मंत्रोना अर्थ अथवा भागवत ना बधा मंत्रोना अर्थ केवल श्रीकृष्ण ज थाय छे, एटलेके तेमां कहेवायेला बधा अवतारो / नाम श्रीकृष्ण नाम छे. तेथीज श्रीजगन्नाथजी कहे छे - "मंत्रोप्येकम् तस्य नामानि यानि". आथी समजी शकाय के श्रीकृष्ण चक्रवर्ती रुपे 'देवाधिदेव' छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१३)

****

श्रीमहाप्रभुजी 'परम तत्त्व' ने तेमना निबंध ग्रंथ ना शास्त्रार्थ प्रकरणमां त्रण प्रकारे प्रमाण द्वारा समजाव्यु छे - १.वेद-गीता-ब्रहसूत्रो-भागवत ना क्रम थी, जेथी ते उत्तर-पूर्व संदेहवारक बनी रहे, २.वेद-ब्रह्मसूत्रो अने गीता-भागवत नाम जोडकाना परस्पर संबंधथी, ३.तेने वेद ना पूर्वकांडमां यज्ञ-कर्म कह्यु छे, अने उत्तरकांडमां ज्ञान रुप बताव्यु छे. परतु मूलत: ते उभय ज्ञान-क्रिया रुप छे, जेनुं निरुपण भागवत मां कृष्ण स्वरुपे करवामां आव्यु छे.

गोपाल पूर्वतापनीय उपनिषद कहे छे - "सच्चिदानंद वेदांत थी जणाय तेवा गुरु रुप, बुद्धिना साक्षी, अने जेने कर्म करवा छतां श्रम पडतो नथी एवा श्रीकृष्ण ने हुं नमन करुं छुं." वधुमां कहे छे "श्रीकृष्ण परमात्मा नुं नाम लेवुं, तेमनुं भजन करवुं एनुं नाम भक्ति छे. आलोकनी अने परलोकनी उपाधिनो त्याग करी परब्रह्म श्रीकृष्ण मां मनने तल्लीन करवुं तेनुं नाम भजन छे".

गोपाल उत्तरतापनीय उपनिषद कहे छे - "श्रीकृष्ण परमात्मा ने जरा के मृत्यु नथी, ते स्थाणु छे, अच्छेद छे, जे सूर्यमां रहेल छे, जे ईन्द्रियो मां रहेल छे, जे तमाम देवोमां रहेल छे, जे तमाम प्राणीओमां प्रवेश करी प्राणीमात्र ने धारण करे छे ते आ छे".

श्रीशंकराचार्यजी पण गीताभाष्य नी प्रस्तावनामां लखे छे- श्रीकृष्ण वासुदेव ने विशे मुर्खलोको ईश्वरत्व अने सर्वज्ञत्व नी शंका करे छे". मधुसूदन सरस्वति लखे छे- "कृष्णात् परं किमपि तत्त्वं न जाने".

वेद मां 'कृष्ण' शब्द नी व्युत्पत्ति करतां कहे छे- 'कृ' एटले 'सता' अने 'ण' एटले 'आनंद', अर्थात् 'कृष्ण' ए तत्त्व नुं नाम छे, जे 'सदानंद' छे.

माटेज श्रीमहाप्रभुजी 'श्रीकृष्ण शरणं मम' अने 'कृष्ण तवास्मि' मंत्रो द्वारा श्रीकृष्ण नी शरणागति अने समर्पण नो बोध आपे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१४)

****

तदर्थ समझी शकीए छीए के श्रीमहाप्रभुजी "कृष्णसेवा सदा कार्या" ने 'स्वसिद्धांत' शा माटे कही रह्या छे ? तदुपरांत "सर्वदा सर्वभावेन भजनियो व्रजाधिप:, स्वस्यायमेव धर्मोहि नान्यक्वापि कदाचन", अर्थात् मात्र व्रजाधिप श्रीकृषृणनुंज हंमेशा भजन (सेवा अर्थमां) करवुं जोईए, ते सिवाय पुष्टिजीवनुं अन्य कर्तव्य नथी, एम कहेवानुं शुं तात्पर्य छे ?

अहीं आपश्री 'कृष्ण' नामना कोई सामान्य देवता नी भक्ति करवानी आज्ञा करी रह्या नथी, परंतु चक्रवर्ती राजावत् देवाधिदेव परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण नी सेवा करवानो उपदेश आपी रह्या छे, केमके तेओ 'पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद' ग्रंथ मां समझावे छे तेम 'पुष्टिजीवो' नी उत्पत्ति नुं प्रयोजन ज श्रीकृष्ण नी सेवा छे. माटे 'कृष्णसेवा' ने पोतानो सिद्धांत बतावे छे.

श्रीमहाप्रभुजीना मते 'भगवानेव फलम्' छे. तेथी जो भगवान श्रीकृष्ण ने प्राप्त करवा होय तो तेमनी साथे व्यक्तिगत संबंध स्थापित करवो जरूरी छे. माटेज ज्यारे आपणे "श्रीकृष्ण शरणं मम" मंत्र नो अर्थसह उच्चार करीए छीए त्यारे स्वीकारीए छीए के 'श्रीकृष्ण मारा रक्षक छे'. तेवीज रीते निवेदन मंत्र "कृष्ण तवास्मि" कहिए त्यारे आपणे कृष्ण ना होवानुं कबुलीये छीए. तेंनो अर्थ थाय - 'कृष्ण मारो छे'. आम अरसपरस व्यक्तिगत संबंध स्थापित थाय छे, जेवीरीते लोकमां कोई स्त्री कोईक पुरुष नी पत्नी होवानुं कबुले त्यारे स्वाभाविक रीते तेनी ते पुरुष तेणीना पति होवानी ज स्वीकृति छे. ते रीते स्त्री-पुरुष नो व्यक्तिगत संबंध स्थापित थाय छे.

एवी ज वात श्रीकृष्ण साथे व्यक्तिगत संबंध जोडवानी आ वात छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१५)

****

ज्यारे आपणे 'हे कृष्ण तमारो छुं' कही भगवान श्रीकृष्ण साथे व्यक्तिगत संबंध स्थापित करीए छे, तेनी पृष्ठभुमि मां सृष्टि नी उत्पत्ति समये पुष्टिजीव तरीके भगवाने स्वयं करेलुं वरण छे. त्यारेज भक्ति रुपी 'बीजभाव' भगवान पुष्टिजीव मां स्थापित करे छे. अनेक जन्मो पर्यंत भक्ति नुं ते बीज सुषुप्त अवस्था मां रहेतुं होई शके छे, परंतु भगवद् कृपाथी सत्पुरुष ना संगना कारणे श्रीमहाप्रभुजी जेवा आदर्श गुरु द्वारा ज्यारे आपणने आपणी साची ओलख थाय, जेनी आपणने सहस्त्र परिवत्सर थी विस्मृति थई चुकेली छे, तथा आपणो अंगीकार करी ब्रह्मसंबंध मंत्र द्वारा पून: आपणो संबंध श्रीकृष्ण साथे स्थापित करावे, त्यारे आपणे आपणु सर्वस्व समर्पित करी, तेमनुं 'दासत्व' स्वीकारी कहीए छीए के "है कृष्ण हुं तमारो छुं".

आम ज्यारे आपणो प्रभु साथे व्यक्तिगत संबंध स्थापित थाय त्यारे, जेम पत्नी द्वारा कोई पुरुष नुं पति रुपे वरण करवामां आवे त्यारे तेने पतिनी सेवा करवानो अधिकार प्राप्त थाय छे, साथे तेनुं पतिनी सेवा करवानुं अनिवार्य कर्त्तव्य पण बने छे. तेवीज रीते श्रीकृष्ण ना दास होवानुं स्वीकारी ज्यारे आपणे तेओ 'स्वामी' होवानुं कबुल करीए त्यारे तेमनी सेवा आपणो सहज धर्म बने छे. तदर्थ श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करे छे

के - "कृष्ण सेवा सदा कार्या", ए मारो सिद्धांत छे.
आथी जो ब्रह्मसंबंध कर्या पछी श्रीकृष्ण नी भावपूर्वक सेवा न करीए तो आपणी साची फरज चुकीए छीए तेमज आपणे करेली कबुलात खोटी साबित थाय, एटलुं ज नहीं, गुरु श्रीमहाप्रभुजी ना उपदेश नी अवज्ञा करवा माटे दोषी पण बनीए छीए. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१६)

****

श्रीमहाप्रभुजीना ग्रंथोनो तलस्पर्शी अभ्यास करतां स्पष्टपणे समजी शकाय छे के विभिन्न ग्रंथोमां तेमणे करेली आज्ञाओनुं अनुसंधान छे तेमज ते सारगर्भित छे. ज्यारे आपणे ब्रह्मसंबंध द्वारा श्रीकृष्ण साथे व्यक्तिगत संबंध नो स्वीकार करीए छीए त्यारे आपणुं तेमनी साथे आदान-प्रदान (interaction) व्यक्तिगत स्तर पर ज संभवी शके छे, ते सार्वत्रिक होई शकतुं नथी.

ते हेतुथी ज श्रीमहाप्रभुजीए भक्तिवर्धिनी ग्रंथमा "गृहे स्थित्वा स्वधर्मत:" आज्ञा करेली जणाय छे. एवा ज बीजा वचनों पण मले छे. "कृष्ण सेवा सदा कार्या" (सि.मु.), ज्यां 'सदा' शब्द प्रयोग करवामां आव्यो छे. "सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिप:", तेमज "स्मरणं भजनं चापि न त्याज्यम्" (चतु:श्लोकी). अहीं पण 'सर्वदा' शब्द प्रयोग करवामां आव्यो छे तेमज भजन (सेवा अर्थ) नो क्यारे पण त्याग न करवानी आज्ञा करी छे.

आवा बधा वचनो नो संकलित अर्थ स्पष्ट थाय छे के जीव नो भौतिक तेमज मानसिक संपर्क / संबंध सतत पोताना सेव्य श्रीकृष्ण साथे जोडायेल रहेवो जोईए. श्रीमहाप्रभुजी ज्यारे सिद्धांत मुक्तावली ग्रंथमां साधन रुप 'तनु-वित्तजा' सेवानो उपदेश करे छे, तेनाथी आपणी भौतिक संन्निधि आपणा सेव्य स्वरुप साथे बनी रहे छे, जे ज्यारे आपणुं चित्त संपूर्णपणे प्रभु साथे संलग्न थाय त्यारे ते फलरुपा 'मानसी' नी अवस्था होवानुं समजाव्यु छे.

आम ज्यारे श्रीमहाप्रभुजी "भगवानेव फलम्" (पु.प्र.म.भेद) कही रह्या छे, त्यारे ते 'भगवान श्रीकृष्ण' साथे संपूर्ण एकरुपता - तादात्म्य संबंध स्थापित करवानुं प्रयोजन तेमना उपरोक्त वचनोमां स्पष्टपणे समजी शकाय छे. लौकिक मां पण प्रत्येक संबंध नी शुरुआत मां मात्र संग थवाथी क्रमश: उत्तरोत्तर ते प्रेम आसक्ति अने व्यसन नी अवस्था प्राप्त करी लेती होय छे, जे अवस्थामां पारस्पारिक ओतप्रोतता अने अनिवार्यता स्थापित थई जती होय छे.
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१७)

****

तदुपरांत श्रीमहाप्रभुजी सुबोधिनीजी मां आज्ञा करे छे के - "गृहस्थिते: उत्कृष्टं, न भगवदीयत्व मात्रेण, किंतु , भगवता सह स्थित्वा, भगवत्कार्यार्थ वा अन्यथा न स्थातव्यम्" (सु.३.१.२), अर्थात् - कोई व्यक्ति भगवदीय होय एवा कारणे तेनो गृहवास उत्तम मानी शकाय नहीं. जो ते भगवान नी साथे एटले के भगवान ने घरमां

पधरावीने गृहमां वास करे अथवा भगवत्कार्य माटे - भगवत् सेवा करवाना हेतुथी गृहमां निवास करे तो तेनो गृहवास उत्तम कहेवाय. अन्यथा तेनी गृहस्थिति निष्प्रयोजन छे.

श्रीमहाप्रभुजीना गृहसेवाना आग्रह माटेनो आथी विशेष शुं प्रमाण होई शके ?.भगवत् सेवा विना, आपश्री पुष्टिजीव नी घरमां स्थिति ने ज उचित गणता नथी. तेमनुं घरमां रहेवानुं प्रयोजन ज पोतान घरमां 'कृष्ण सेवा' माटे छे.

स्वाभाविक छे के कोई बे व्यक्ति एक साथे रहेती न होय तो तेमनी वच्चे स्नेह नो तादात्म्य संबंध दृढ थई शके नहीं. परस्परने सर्व रीते सुखी करवानी प्रवृत्ति सहियारा जीवन मां ज संभव बनी शके, अन्यथा नहीं. जो लौकिक व्यवहार मां आवी स्थिति होय तो जेने आपणे 'हे कृष्ण हुं तमारो छुं' एम कही 'कृष्ण तमे मारा छो' तेवो भाव प्रदर्शित करीए छीए, तेनी सार्थकता अन्यथा शी रीते सधाई शके ?. तेने माटे एकमेकनी संन्निधि अनिवार्य छे, जे उपरोक्त सुबोधिनीजी ना वचन ना खुलासा थी स्पष्ट थाय छे.

ब्रह्मसंबंध करती वखते आपणे करेला सर्वस्व समर्पणना निवेदन नी सार्थकता पण ज्यां सुधी ते बधानो प्रत्यक्ष विनियोग आपणा सेव्यने माटे न करीए तो ते मात्र आपणी मौखिक कबुलात कहेवाय, तेनो हेतु न सधाय, तेने माटे आपणा कृष्ण आपणा घरमां बिराजतां होवा जरूरी छे.

तेथीज श्रीमहाप्रभुजीए "गृहे स्थित्वा स्वधर्मत:" नी आज्ञा, तेमना 'भक्तिवर्धिनी' ग्रंथमां करी छे तेनी यथार्थता समजी शकाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१८)

****

आपणे अगाउ जोयु तेम मात्र 'श्रीकृष्ण' नी सेवा-शरणागति अने तेमने समर्पण करवानी आज्ञा श्रीमहाप्रभुजीए करी छे, तेनुं तात्पर्य श्रीकृष्ण चक्रवर्ती राजा वत् देवाधिदेव होवुं छे. भागवत मां "कृष्णस्तु भगवान स्वयं" कही कृष्ण नुं, भगवान होवानुं प्रतिपादन करवामां आव्युं छे. तदर्थ भागवत 'कृष्ण प्रधान' महापुराण छे. माटेज श्रीमहाप्रभुजीए भागवतना द्वादश स्कंधोनी तुलना श्रीनाथजी ना द्वादश अंगो साथे करी छे. अर्थात् भागवत साक्षात् श्रीनाथजी (श्रीकृष्ण) नुं ज स्वरुप छे.

भागवत ना द्वितिय स्कंधना वर्णन मुजब स्वयं भगवाने ब्रह्माजी ने 'चतु:श्लोकी भागवत' कह्यु हतुं. तेनो थोडाक विस्तारपूर्वक ब्रह्माजीए नारदजीने उपदेश आप्यो. परंतु नारदजीना आदेश मुजब भगवान ना ज्ञानावतार महर्षि व्यासजीए तदनुसार समधिमां भगवान नी समग्र लीलाओना दर्शन कर्या अने तेनुं भागवत रुपे निरुपण कर्यु, जेमां विशेषत: श्रीकृष्ण नी विविध लीलाओनुं वर्णन छे. अर्थात् भागवत स्वयं भगवान नी वाणी छे.

तदुपरांत व्यासजीए शिवपुराण इत्यादि अन्य पुराणोनी पण तुलना करी छे, जेमां तेमणे जुदा जुदा देवोनी प्राधान्यता निरुपित करी छे, केमके जे ते देवोनी उपासना करनार भक्त माटे ते ते देवोमां अनन्यता आवश्यक छे. प्रत्येक देव ना उपासक माटे पोताना आराध्य देवमां अनन्यासक्ति होवी जरुरी छे.

आ बाबतने श्रीमहाप्रभुजीए 'बालबोध' ग्रंथमां समजावतां कह्यु छे - "तदाश्रय - तदीयत्व बुद्धयै किंचित समाचरेत्" (बा.१८). अर्थात् जो कोई 'शिव भक्त' होय तो तेने शिवजीमां अनन्यासक्ति होवी जरुरी छे, अने

जो ते 'विष्णु भक्त' होय तेने विष्णुमां अनन्यासक्ति राखवी जोईए.

माटेज श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के जो आपणे श्रीकृष्ण ने आपणा 'सेव्य स्वरुप' तरीके स्वीकार्या छे, तो तेमनामां आपणी संपुर्ण अनन्यता होवी अनिवार्य छे, केमके कृष्ण नी ब्रह्मरुपता गीताना वचन "वेदश्च सर्वे: अहमेव वेद्य:" थी सिद्ध छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्री श्या.म.जी)

"पुष्टि-सिद्धांत चिंतन" (१९)

****

'पुष्टिप्रवाहमर्यादा भेद' ग्रंथमां "भगवानेव फलम्" नो निर्देश करी श्रीमहाप्रभुजी नुं लक्ष पुष्टिजीवने 'परम तत्त्व'नी प्राप्ति करावगानुं स्पष्ट जणाय छे. तदर्थ तेओ कोई अंश, कला के विभुति रुपनी आराधना करवानो उपदेश न आपतां परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण नुं भजन (सेवा) करवानी आज्ञा करी रह्या छे. ते माटे आपे वेद, गीता ब्रह्मसूत्रो तेमज भागवत, ए चारेय भगवद् शास्त्र प्रमाणो - 'प्रमाण चतुष्टय' ना आधारे देवाधिदेव 'कृष्ण' ने 'परम तत्त्व' तरीके प्रमाणित करी बताव्या छे.

आमां महत्वनी वात ए के श्रीमहाप्रभुजी कोई एक शास्त्र प्रमाण लईने 'कृष्ण' ने चक्रवर्ती राजावत् नथी कही रह्या, परंतु अनेक शब्द प्रमाणोनी एकवाक्यता ना आधारे ते बाबतनुं प्रतिपादन कर्यु छे. तदर्थ तेओ कहे छे के श्रुतिनो अर्थ गीतानुसारी करवो जोईए अने गीता ने अनुसरीने पुराणनो अर्थ अंचलों जोईए. तेथी ज आपश्रीए ब्रह्म - परमात्मा - भगवान शब्दो नो उपसंहार 'कृष्ण' नाम मां कर्यो छे.

श्रीमहाप्रभुजीनुं मंतव्य मात्र 'प्रमाण' द्वारा ज 'परम तत्त्व' ने सिद्ध करवानुं नथी परंतु तेमना मतानुसार प्रमाण, प्रमेय, साधन अने फल ए चारेय दृष्टीथी 'परम तत्त्व' 'कृष्ण' ज छे. तदर्थ तेओ जेम प्रमाण द्वारा 'परम तत्त्व' रुपे 'कृष्ण' नुं प्रतिपादन करे छे, तेम प्रमेय, साधन अने फल ना दृष्टिकोण थी पण श्रीकृष्ण नी सर्वोपरिता सिद्ध करे छे.

प्रमाण द्वारा 'प्रमेय' ने जाणी शकाय छे. प्रमेय नो अर्थ छे - ते तत्त्व जेने आपणे जाणवुं छे. श्रुति, गीता अने भागवत मां अनेक विधानो प्राप्त थाय छे, जे कृष्ण ने स्वरुपत: 'परमतत्त्व' होवानुं सिद्ध करे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्रीश्या. म. जी)

"पुष्टि सिद्धांत- चिंतन" (२०)

****

'प्रमेय' ना दृष्टिकोण थी 'परम तत्व' ने जाणवुं एटले तेना ब्रह्म-परमात्मा-भगवान ने तेमना स्वरुपथी ओलखवुं. ब्रह्म नो परिचय आपतां श्रुति कहे छे - "यतो वा ईमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत्प्रयन्ति अभिविशन्ति, तद् विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म इति" (तै.उ.३/१), अर्थात् जेमांथी जगत उत्पन थयु छे, जेमां जगत स्थित रहे छे, अने जेमां जगत लय पामे छे, ते ब्रह्म नुं स्वरुप छे.

आनो अर्थ ए ज्यों के 'ब्रह्म' एक एवुं तत्त्व छे, जे प्रत्येक रुप अने अवस्था धारण करी शके छे. माटेज वेद कहे छे - "अजायमानो बहुधा विजायते", अर्थात् ब्रह्म अजन्मा होवा छतां अनेक प्रकारे जन्म ले छे.

परब्रह्म नु कृष्ण स्वरुपे प्रकट थवुं आनुं प्रमाण छे.

भगवान श्रीकृष्ण गीता मां कहे छे के "मारो जन्म अने मारा कर्म दिव्य छे". (गीता ४/९). अर्थात् जेम जीवात्माना जन्म नुं कारण तेना कर्म-बंधन होय छे तेम भगवानना पादुर्भाव कर्मबंधन ना कारणे थतो नथी, परंतु तेओ चोक्कस हेतु माटे पोतानी इच्छा थी जन्म धारण करे छे. जेम गीता मां कहे छे- "यदा यदा ही धर्मस्य ....संभवामि युगे युगे".

वास्तवमां जो आत्मा नी दृष्टि थी जोईए तो 'आत्मा' भगवाननो चिदंश होई तेनो जन्म नथी के नथी मृत्यु. तेतो अनादि अने शाश्वत छे. जन्म तो देहनो थाय छे, अने तेनो नाश थाय छे. भगवान श्रीकृष्ण नो जन्म वसुदेव - देवकी जी ने आपेला वरदाननी पूर्ती करवा माटे थयो हतो, कोई कर्म-बंधन ना कारणे नहीं. भगवान ने कर्मबंधन होता नथी.

भागवत पुराण कहे छे - "गोपीनां तत्पतीनां च स्रवेषामेव देहिनाम् योनिश्चरति सोध्यक्ष: क्रीडनेनेह देहभाक्". (भा.१०-३३-३६), जे बधाना ह्रदयमां वसीने छुपाईने क्रीडा करे छे, ते ज अहीं कृष्ण रुपे प्रकट थयेल छे.आम परब्रह्म कोई पण स्वरुप धारण करी शके छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (गो. श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि सिद्धांत -चिंतन" (२१)

****

श्रीकृष्ण 'परम तत्त्व' परब्रह्म होवानुं प्रमाण द्वारा सिद्ध छे, तेम 'प्रमेय' ना दृष्टिकोण थी एटले के स्वरुपत: पण ते समजी शकाय छे. वेद वचन छे - "सर्वं आलु इदं ब्रह्म", आ जे कांई बधुं छे ते ब्रह्म ज छे. ब्रह्मे ज आ बधा विविध रुप अने नाम धारण कर्या छे, ज्यारे गीता मां भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन ने विभूतियोग समजावतां कहे छे - "रुद्राणां शंकरश्यामि, ऐरावतं गजेन्द्रयां, वैनतेमश्य पक्षिणाम्" (गी. १० - २३/३०). अर्थात् रुद्रोमां महादेव 'कृष्ण जो छे, हाथीओमां ऐरावत अने पक्षियोमां गरुड पण तेओज छे. सर्वे तेमनै ज धारण करेला रुपो छे.

उपरोक्त श्रुति वचन मुजब ब्रह्म ज बधु बन्या होय तो श्रीकृष्ण ना आ वचन तेमने स।वरुपत: 'परम तत्त्व' होवानुं सिद्ध करे छे.

भागवत मां पण दशम् स्कंधमां आ वातनुं प्रमाण मले छे. त्यां वर्णन आवे छे के ज्यारे कृष्ण अक्रुरजी साथे मथुरा पधारे छे त्यारे मल्लोने विजलीनो चमकारो भासे छे, राजाओने पुरुषोत्तम जणाय छे, स्त्रीओने साक्षात कामदेव देखाय छे, दुष्ट राजाओने चक्रवर्ती समान देखाय छे, तेमज कंसने पोतानो काल आव्यानो अनुभव थाय छे, वगेरे. (भा. १०.४३.१७). कृष्ण एक अने तेना रुप अनेक ! जो तेओ परब्रह्म न होय तो आवुं संभव बनी शके खरुं ?

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के बधा देवो मां देवत्व तो होय छे, परंतु कृष्ण मात्र देव ज नहीं परंतु विशेष छे, 'देवाधिदेव छे. तदर्थ कुंती जी कृष्ण ने कहे छे - "भक्तियोग विधानार्थम्" (भा. १-८-२०). 'तमे जेवो भाव छे ते भावने अनुरुप रुप धारण करी तेना मनने हरवा माटे प्रकट थया छो".

आ रीते श्रीकृष्ण ना चरित्रमां, तेमना व्यक्तित्वमां, जीवनमां, प्रत्येक पहेलुमां "सर्वमां "सर्वं खलु इदं ब्रह्म" नी सर्वरुपता प्रकट थाय छे. तेथीज श्री महाप्रभुजी कृष्णने चक्रवर्ती राजावत् सर्वोच्च तत्त्व समजावे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो.श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि सिद्धांत -चिंतन" (२२)

****

जेवीरीते 'कृष्ण' परब्रह्म-परमात्मा-भगवान होवाथी तेमनुं 'देवाधिदेवपणु' अथवा तेमनी सर्वोपरिता 'प्रमाण' तेमज 'प्रमेय' ना दृष्टिकोण थी सिद्ध छे, तेम 'साधन' ना दृष्टिकोण थी पण समझी शकाय छे.

जेम नदी कोई पण दीशामां वहेती होय परंतु अंतमां तो ते समुद्रने जईने मले छे, कोईक सीधी मलेछे तो केटलीक अन्य नदीमां समाईने पछी मले छे, परंतु अंततोगत्वा समुद्रनेज मले छे, आ एक 'साधन' ना दृष्टिकोण थी 'ब्राह्मिक' दृष्टिकोण छे. श्रीमहाप्रभुजीनो स्पष्ट मत छे के कोई पण देवनो उपासक पोताना देवनी ब्रह्मतया उपासना करे छे तो तेनी मुक्ति निश्चित थाय छे. परंतु जो कोई क्षुद्र फलनी प्राप्ति माटे क्षुद्र देवतानी आराधना करे तो तेनी साधना मुक्तिदायक नथी बनी शकती.

'साधन' नो 'ब्राह्मिक' दृष्टिकोण समजावतां कह्यु छे के कोईपण देव जो एक निश्चित साधन थी अने निश्चित प्रकार नी साधना थी ज प्राप्त थाय तो ते 'परब्रह्म' न होई शके, कारण के 'ब्रह्म' नो अर्थ छे, जे सर्वकांई अने सर्व स्थाने छे. तेथी ते कोई एक साधन थी ज मले तेवी मर्यादामां बंधाई न शके. ते सर्व साधनथी प्राप्त थई शके.

उपरोक्त दृष्टिकोण थी ज्यारे 'कृष्ण' नी प्राप्ति माटेना साधननो विचार करवामां आवे त्यारे तेमनी सर्वोपरिता समझी शकाय.

मुंडकोपनिषद कहे छे - "नायमात्मा प्रवचनेन लभ्य, न मेधया, न बहुना श्रुतेन, यमेवैष वृणुते येन लभ्य:, तस्य एष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्" (३.२.३). अर्थात् 'परमात्मा प्रवचनथी, बुद्धि थी, के श्रवणथी मलता नथी, परंतु ते जेनुं वरण करे, तेनी सामे पोताना स्वरुप ने प्रकट करे छे".

आपणने स्वाभाविक प्रश्न थाय के जो तेनुं अस्तित्व होवा छतां बधानी समक्ष प्रकट नदी थतां, छुपाईने रहे छे, तो तेना छुपावानुं स्थान क्यां ? ....क्रमश:...

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्रीश्या. म. जी)

"पुष्टि सिद्धांत -चिंतन" (२३)

****

श्रुतिवचन प्रमाणे भगवान स्वयं ईच्छे तेनी समक्ष प्रकट थाय छे. अर्थात् तेओ सर्वव्याप्त होवा छतां छुपाईने रहेल छे. आपणने स्वाभाविक प्रश्न थाय के तेओने छुपावानुं स्थान कयुं होई शके ?

भगवान ने छुपावाना बे स्थान छे. शास्त्र कहे छे तेम सृष्टि मां जेटला पण रुप-नाम छे, ते बधा, श्रुतिवचन - "एकोहं बहुस्याम् प्रजायेय" प्रमाणे भगवाने ज धारण करेला छे. ब्रह्मे अपरिच्छिन्न - अपरिमित होवा छतां अनंत परिच्छिन्न - परिमित रुपो ग्रहण कर्या छे, परतुं तेमां तेओ भगवान तरीके अनुभव मां आवता नथी. अर्थात् तेओ ते सर्व रुपोमां छुपाई गयेल छे, जेवीरीते कोई अभिनेता ज्यारे कोई स्वांग धारण करीने सचोट अभिनय करे तो आपणे ते अभिनेताने ओलखी शकता नथी. आमज जगतना विविध रुपोमां

भगवान छुपायेल छे.

श्रीमहाप्रभुजी निबंध ना मंगलाचरणमां कहे छे के 'अद्भुतकर्मा कृष्ण अनंत रुप-नामोमां विभक्त थई जगतमां क्रीडा करी रह्या छे.' परंतु आपणने ते अनंत नामरुपोमां 'कृष्ण' नजरे पडता नथी.

भगवान ने छुपावानुं बीजु स्थान भक्तनुं ह्रदय छे. आनुं उदाहरण भागवतना रासपंचाध्यायी मां मले छे. लघुरासना प्रसंगमां गोपीजनोने सौभाग्य मद थतां भगवान अंतर्ध्यान थई गया त्यारे गोपीजनोए अनेक स्थानों पर बहार भगवान ने शोध्या परंतु तेओ तो तेमना ह्रदयमां ज स्थित हतां. आपणे मंगलाचरणमां कहिए छीए - "नमामि ह्रदये शेषे .....". प्रत्येक प्राणीमात्र ना ह्रदयमां परमात्मा बिराजे छे, परंतु सौ कोई तेमने बहार शोधवा मथे छे.

आनो अर्थ ए थाय के जो छुपायेला भगवान ने शोधवा होय तो, अर्थात पामवा होय तो कोई प्रकारनी साधनानी आवश्यकता छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्री श्या.म.जी)

"पुष्टि सिद्धांत -चिंतन" (२४)

****

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के भगवान आपणा ह्रदयनी भीतर अथवा सृष्टि मां अनंत नाम-रुपोमां छुपायेल छे. तेने प्राप्त करवा माटे तेने शोधवा जरुरी छे. तेने माटेज शास्त्रोमां विभिन्न साधनाओ बतावयामां आवी छे. कर्ममार्गनी, ज्ञानमार्गनी, भक्तिमार्गनी, योगमार्गनी, वैराग्यमार्गनी, पूजामार्गनी एम अनेक प्रकारनी शास्त्रोक्त साधनाओनुं प्रयोजन एकमात्र भगवान नी खोज छे.

जो कोई उपरोक्त साधना पद्धतिओ मांथी कोईक एकने अपनावे परंतु तेनी पाछल तेनो हेतु भगवान ने शोधवानो न होय, तो ते क्रिया मात्रज कहेवाय, अथवा पाखंडनुं आचरण हशे, तेने साची साधना न कहेवाय. जो साचा मनथी कोई पण साधना ने अनुसरवामां आवे तो साधकने भगवान अवश्य मले छे, तेना अनेक उदाहरण आपणने पुराणोमां वांचवा मले छे.

श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करे छे - "कृष्ण सेवा सदा कार्या". 'कृष्ण सेवा' ए आपणी साधना प्रणाली छे. ते विषयमां अनेक विधि-विधान बताववामां आव्या छे. तेनुं प्रयोजन कृष्ण ने खोजवानुं छे. जो सेवा करतां मनमां कृष्ण ने मेलववानो भाव नथी, ते माटेनी आतुरता नथी, तो जे पण प्रकारे आपणे सेवा करतां होईशुं, ते मात्र कोई कर्मकांड कहेवाशे, कोईपण रीते तेने 'भक्ति' नहीं कहेवाय. अने तेथी ते फलदाई नहीं बने.

मोटाभागे आपणे जेम अनेक दैनिक कार्यो करवाना होय छे, तेमांना एक कार्य रुपे सेवा करतां होईए छीए, तदर्थ घणा कहेतां होय ते के 'में सेवा पतावी दीधी !'. सेवा करवा पाछल तात्पर्य शुं छे, ते तरफ भाग्येज आपणुं लक्ष होय छे. भक्तिना भाव विना, भगवद् प्रेम विना के भगवान नो विरह अनुभव्या जो मात्र क्रियावत् सेवा करवामां आवे तो ते कृष्ण ने प्रकट थवानुं कारण बनी शकतुं नथी, केमके तेमां तेने शोधवानुं आपणुं प्रयोजन होतुं नथी !.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्री श्या. म. जी)

"पुष्टि सिद्धांत -चिंतन" (२५)

****

"प्रत्येक साधना प्रणालीना से पासा (पक्ष) होय छे. एक शास्त्र मां बतावेला विविध उपायो, जेवाके कर्म, ज्ञान, भक्ति, योग, वैराग्य, जप, तप, व्रत, तीर्थ इत्यादि. बीजो पक्ष छे तेनो हेतु अर्थात् प्रयोजन, जे छे - छुपायेल भगवाननी शोध. ते बन्ने वच्चे घनिष्ठ संबंध छे. चोक्कस साधना प्रणाली विना भगवान ने शोधवानो मतलब छे - आमतेम भटकवुं.

साधनानी विविध प्रणालीओनी चर्चा श्रीमहाप्रभुजीए तेमना 'बालबोध' ग्रंथमां करी छे. तेमां सांख्य, योग, शिवभक्ति, विष्णुभक्ति इत्यादि तेमज तेना द्वारा प्राप्त थतां फलनुं निरुपण आपे कर्यु छे. विभिन्न देवो माटे जुदी जुदी साधना प्रणालीनो निर्देश शास्त्रोए कर्यो छे.

परंतु 'कृष्ण' नी सर्वोपरिता समजावतां श्रीमहाप्रभुजी कहे छे - "असाधनं साधनं करोति". असाधन ने साधन बनावे छे कृष्ण. अन्य देवताओ कोई विशिष्ट साधनोनी मर्यादामां बंधायेला छे, अर्थात् तद् तद् देवताओं माटे निश्चित साधनाओ द्वारा जे ते देवो ने प्राप्त करी शकाय, ज्यारे कृष्ण ने प्राप्त करवा कोई निश्चित साधन नी मर्यादा नथी. तेने कोई पण भावथी भजवामां आवे, चाहे कामथी, क्रोधथी, मोहथी, लोभथी, मदथी, मत्सरथी, के भयथी, कृष्ण तेने प्राप्त थई शके छे. तेना अनेक उदाहरण भागवतमां आलेखित छे. गोपीजनोने कामथी कृष्ण मल्या छे, कंसने भयथी, शिशुपालने द्वेषथी, वृष्णिओने संबंधी होवाना ना कारणे, वगेरे अनेक दृष्टांत उपलब्ध छे.

पूतना जेवी कृष्ण ने मारी नांखवा आवेली राक्षसीने पण मातृवत् स्नेहनो ढोंग करवा छतां भगवाने तेने मुक्ति आपी छे. श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के जीव असाधन होय, सुसाधन होय के दुष्टसाधन होय, कृष्ण मां तेनो उद्धार करवानुं सामर्थ्य छे, कारण के ते ज ब्रह्म, परमात्मा, भगवान बधुंज छे. आम 'साधन' ना दृष्टिकोण थी पण 'कृष्ण' नु चक्रवर्तीपणु अर्थात् सर्वोपरी होवानुं प्रतिपादित थाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो.श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि सिद्धांत -चिंतन" (२६)

****

प्रमाण, प्रमेय अने साधन नी दृष्टि थी आपणे 'कृष्ण' नी सर्वोपरिता नो विचार क्यों. तेवीज रीते 'फल'ना दृष्टिकोण थी पण 'कृष्ण' ने मुलववा जोईए, कारणके श्रीमहाप्रभुजी प्रमाण-प्रमेय-साधन-फलनी एकरुपता 'कृष्ण' स्वरुपे प्रतिपादित करे छे.

आनुं विश्लेषण करतां पहेला 'फल' नाम स्वरुप ने समजवुं जरूरी छे. सामान्यत: अमुक कार्य करीए त्यारे तेनुं कांईक परिणाम आवे. तेने ते कार्यनी 'नियति' कहेवाय छे. ते परिणामने आपणे 'फल' कहिए छीए. आ फलने क्यारेक 'निंदा' ना रुपमां कहेवाय, जेम आपणे कहिए के 'आ तेना कर्मोनुं फल भोगवे छे'. तेवीज रीते 'प्रशंसा' रुपे पण कहेता होईए छीए के 'आ तेना (सत्) कर्मोनुं फल छे.

आम 'फल' कोई क्रिया नुं निश्चित परिणाम छे, जे स्वीकार्य होय के अस्वीकार्य, अथवा तेनी अभिलाषा होय के न होय, कारण के ते आपणा इच्छा थी के अनिच्छाथी करेला कर्मनुं फल होय छे. आ रीते कोईपण फलना त्रण प्रकार होय छे - १. नियति, २. स्वीकार्य (अथवा अस्वीकार्य), ३. अपेक्षित के (अनपेक्षित) फल.

आ त्रणेय प्रकार आपणे करेला साधन रुप कर्मना परिणाम स्वरूप छे.

ज्यारे कोईपण 'कर्म' आपणे साधना ना रुपमां करीए, पछी ते कर्ममार्गीय साधना होय, ज्ञानमार्गीय साधना होय, के भक्तिमार्गीय साधना होय, अथवा त्याग रुपी वैराग्यमार्गीय साधना होय, तेना परिणाम स्वरूप साधना नी कोई नियति रुपे फल प्राप्ति थती होय छे. भले ते आपणी इच्छानुसार होय के अन्यथा होय, आपणने स्वीकार्य होय के अस्वीकार्य, कारण के ते फल ते साधना नी नियति होय छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि सिद्धांत -चिंतन" (२७)

****

प्रत्येक देवतानुं कोई मर्यादित सामर्थ्य होय छे, तदनुसार ज बधा देवताओ नी साधनानुं जे स्वरुप श्रीमहाप्रभुजीए समजाव्यु छे, ते ए के प्रत्येक देवता कोई विशिष्ट साधना नो प्रतिसाद आपे छे, जे ते देवताना सामर्थ्य मुजब ज होय छे. तेओ बधाज प्रकारनी साधना नुं फल आपी शकतां नथी.

जेवीरीते श्रीरामचंद्रजी नुं मर्यादा पुरुषोत्तम नुं स्वरुप छे, तेमां जो कृणलीलानो भाव करवामां आवे तो तेमनी मर्यादा खंडित ज थई जाय. अर्थात् थे प्रकारनी साधना श्रीकृष्णनी भक्ति माटे निर्धारित करवामां आवी छे, तेवी श्रीरामचंद्रजीना स्वरुपमां करी शकाय नहीं. नृसिंह स्वरुपे भगवानने लीला विशिष्ट हेतु माटे करी हती. ते स्वरुप मां कृष्ण नी लीलानो अनुभव थई शके नहीं. आनुं तात्पर्य ए छे के भगवान नुं जे पण स्वरुप छे, तेनी साधना ते स्वरुप ना सामर्थ्य अनुरुप करवामां आवे तो तेनो फल रुपे प्रतिसाद मली शके, अन्यथा नहीं.

फलना विषयमां ते नियतिना रुपमां शुं छे, ते स्वीकार्य के आपणी अभिलाषा ना रुपमां शुं छे, ये त्रणेय बाबतोनो विचार करीने ज्यारे साधना करवामां आवे त्यारे तेनुं फल एकज अर्थमां प्रकट थाय छे. कारणके जो आपणा मनमां संकल्प विकल्प हशे, कोई एक देवनी साधना बीजा देव माटे करवामां आवे तो फलनी अनिश्चितता रहे छे.

तेथीज श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के जे ते देव पोतपोतानी साधनाना फलदाता छे, परंतु 'कृष्ण' सर्वफलदाता छे, कारणके कृष्ण मां कर्तुम्, अकर्तुम्, अन्यथाकर्तुम् सामर्थ्य छे, तेओ 'सर्व समर्थ' छे. माटे त्यां नियति नो प्रश्न ऊभो थतो नथी. नियति नो अर्थ एक निश्चित रुपमां छे, ज्यां जे ते साधनानी फल आपवानी मर्यादा छे, परंतु कृष्ण सर्वोपरि होई कोई पण फल आपवानी मर्यादामां बंधायेला नथी.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि सिद्धांत -चिंतन" (२८)

****

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के जे नियत फल आपवावाला देव छे ते भगवान नी विभुति रुप छे. तेमने फल आपवानो सीमित अधिकार होय छे. प्रत्येक कर्मनी कोईक नियति होय छे. शास्त्र मां विधान करवामां आवेला छे के अमुक कर्मनुं अमुक फल मले छे. तेथी थे प्रकार नुं फल अपेक्षित होय तदनुसार कर्म करवुं आवश्यक

छे. बीजी रीते एम कही शकाय के अमुक कर्म करवाथी तेनुं नियत फल भोगववुं पडे.

ये प्रमाणे बधा देवताओनी पण नियति होय छे. तेओ अमुक फल ज आपी शके छे. तेथी अमुक कर्म करवाथी तेनाथी बंधायेल देव तदनुसार फल आपे छे, केमके देवताओ कर्मनियत होय छे. जेवीरीते गणेशजी 'विघ्नहर्ता' देव गणाय छे. अर्थात् तेओ भक्तना विघ्न दूर करवा समर्थ छे. परंतु गणपति ने कोई बीजा प्रयोजन थी भजे तो जे फल आपवानी तेमनी नियति नथी, ते फल प्राप्त थई शके नहीं, कारणके तेमनामां 'कर्तुम्-अकर्तुम्-अन्यथा कर्तुम' सामर्थ्य नथी. ए तेमनी मर्यादा छे.

जो कोई देवने तेमना विभूति स्वरुपे भजवामां आवे तो तेमनी फलदायीता मेमना ते स्वरुपनी नियति सुधी सीमित होय छे. परंतु जो तेमने परब्रह्म परमात्मा भगवान रुप मानीने तेमनुं भजन करवामां आवे तो तेमनांमां सर्व समर्थता प्रकट थाय छे. कृष्ण मां पण जो आपणो भाव परब्रह्म परमात्मा भगवान नो छे तो तेमनामां कर्तुम्-अकर्तुम्-अन्यथाकर्तुम् सामर्थ्य प्रकट थाय छे, परंतु जो कृष्ण ने एक विभुति रुप कोई क्षुद्र देव मानी कोई मनोकामना नी पूर्ती माटे तेमनुं भजन करवामां आवे तो में परब्रह्म नहीं रही जतां तेओ एक सामान्य फल आपनारा नियत देवता बनी जशे.

तेथी ज श्रीगुसांईजी आज्ञा करे छे के कृष्णनी भक्ति पण जो सकाम भावथी करवामां आवे तो तेने पुष्टिमार्गमां अन्याश्रय कहेवाय. तेवी रीते जो कोई देव नी भक्ति निष्काम भावथी करे तो तेने परब्रह्म नाम भजनुं फल प्राप्त थई शके छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो.श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि सिद्धांत -चिंतन" (२९)

****

आपके जे साधना करीए छीए तेनुं कोई निश्चित नियत फल होय छे. ज्यां फल नियत होय तो ते साधना द्वारा प्राप्त थतां फलने भोगववुं ज पडे छे. तेथी श्रीमहाप्रभुजी समझावे छे के जे नियत फल ना दाता छे ते भगवाननी कोई विभुति रुप देव होय छे कारण के प्रत्येक कर्मनी कोई नियति होय छे, अर्थात् अमुक कर्म करवाथी अमुक फल प्राप्त थाय पछी भले आपणे ते ईच्छता होईए के ते अपेक्षित न होय. तेथी जेम कर्म करवाथी तेनुं नियत फल मले छे, तेम देवतानी पण अमुक नियति होय छे, तेथी देवता अमुक कर्म करवाथी तदनुसार फल आपी शके छे, केमके देवता पण कर्मनियत छे.

आनो सीधो अर्थ ए छे के ज्यारे आपणे कोई कामना थी कोई कर्म के साधना करीए छीए त्यारे कोई नियत फल नी प्राप्ति आपणो हेतु होय छे. तदर्थ जे देवनी साधना आपणे करीए ते पण आपणी कामना थी नियत थई जवाथी ते आपणी कामना ने आधिन थई ने रहे छे, परंतु जो आपणे कोई कामना थी तेमनुं भजन नहीं करीए अने निष्काम भजन करीशुं तो ते भजन कामना रहित होवाथी तेमां नियति नहीं होय, अर्थात् कामना न होवाथी तेवी कामना नुं फल मलवानुं संभावित नहीं रहे. ते समये आपणे जे देवने भजनीय गणीशुं ते परब्रह्म परमात्मा भगवान स्वरुप थई जवाथी तेमां कर्तुम्-अकर्तुम्-अन्यथाकर्तुम् सामर्ध्य प्रकट थई जशे. परंतु जो तेमने कामना थी भजीशुं तो ते आपणी कामना नी पूर्ति करवा माटे तत्पर थई जशे अने तेमना मां सर्वसमर्थता प्रकट नहीं थाय. आथी समझी शकाय छे के आपणे कोई देवने कया भावथी भजी रह्या छीए ते महत्त्वपूर्ण छे.

(डो. जयेंद्र सोनी)   (संदर्भ - गो. श्रीश्या. म. जी)

" पुष्टि सिद्धांत -चिंतन " (३०)

****

मानवजीवनमनी विडंबना एक छे के तेमां 'कामनियति' अने 'कर्मनियति' बन्ने भाग भजवे छे. कामनियति एटले कामना अनुसार फल प्राप्ति अने कर्मनियति एटले अमुक कर्म करीए, तेथी तेनुं कोई निश्चित फल होय. जे नियति छे अने तदर्थ कोई देव नी उपासना करवामां आवे तो, श्रीमहाप्रभुजीना मते ते भजनीय के उपास्य देव परब्रह्म परमात्मा भगवान न होतां, तेमनी कोई विभुति होय छे, कारणके ते कोई विशिष्ट आकांक्षा अनुसार फल आपवा माटे तेमनी उपासना हेतु थी भगवाने धारण करेलुं रुप छे, जेनुं विशिष्ट फल आपवानुं सामर्थ्य के अधिकार मात्र होय छे.

स्वयं भगवानेज प्रत्येक विशेष कार्य माटे विभिन्न विभुति रुपो धारण कर्या छे. तेथी जे ते फल मेलववा माटे जुदा जुदा देवी - देवताओनी उपासना करवाना विधान छे. जेवीरीते लक्ष्मी धन नी देवी छे, अने सरस्वती विद्या नी देवी छे. तदर्थ धन प्राप्ति माटे लक्ष्मीजीनी अने विद्या मेलववा सरस्वती देवीनी उपासना करवी पडे. जे फलनी अपेक्षा होय तदनुसार जेनुं ते सामर्थ्य होय तेनाथी विपरित आराधना जो करवामां आवे तो, अभिलषित फल प्राप्ति थाय नहीं.

आम भगवाने जे कार्य माटे, जे नियति हेतु थे रुप धारण कर्यु होय ते देवनुं ते कर्म अथवा कामनानुसार फल आपवा माटेनुं विभुति स्वरुप छे, तेथी तेमां मर्यादित सामर्थ्य होय छे. ते स्वरुप ब्रह्मे स्वयं धारण करेलुं होवा छतां तेमां कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम् सामर्थ्य होतुं नथी.

आ प्रकारथी कर्म अने कामना नी नियति ना विभाग करीने सृष्टि ना संचालन माटे विभिन्न देवी-देवताओ ना रुप धारण कर्या छे, अने तेमनी साधनानी प्रक्रिया निश्चित करी छे, जेथी जे कर्म के साधना माटे जे देवनुं रुप धारण कर्यु छे, ते देवनी साधना द्वारा तेनुं फल प्राप्त थाय छे. परंतु भगवान स्वयं   आवी कोई मर्यादा थी बंधायेला न होवाथी तेमनामां कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम् एम सर्व सामर्थ्य होय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)   (संदर्भ - गो. श्री श्या.म. जी)

"पुष्टि सिद्धांत - चिंतन" (३१)

****

उपरोक्त हकिकतथी आपणे समजी शकीये छीए के बधाज देवताओ भगवाने ज लीधेला रुपो छे, जेम छतां जे ते फलना नियामक देवनुं तदनुसार फल आपणी कामना अने आपणा कर्मथी नियत छे, अने तेने माटे ते विभुति रुप छे. जोके प्रत्येक देव आराध्य छे, पूजनीय छे, परंतु तेमनुं सामर्थ्य जे ते नियत फल आपवा पुरतुं ज छे, ज्यारे पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण मां सर्व फल आपवानुं सामर्थ्य होवाथी ते अर्थमां फल ना दृष्टिकोण थी पण तेओ चक्रवर्ती समान सर्वोपरी छे, ते वात श्रीमहाप्रभुजीए समजावी छे.

आम 'फल' ना दृष्टिबिंदु थी पण कृष्ण नी सर्वोपरिता अने सर्व समर्थता सिद्ध थाय छे, जेनो खुलासो श्रीमहाप्रभुजीए पूर्व मां उल्लेखित गदाधरदासजी ना वार्ता प्रसंगमां कहेवामां आव्यो छे.

आ वातनी पुष्टि ब्रह्मसूत्र मां पण करवामां आवी छे, ज्यां कह्यु छे - "फलम् अंत: उपपत्ते:" (ब्र.सू.३.२.३१). अर्थात् जे फल प्राप्ति थाय छे, ते परब्रह्म परमात्मा भगवान थीज प्राप्त थाय छे. अहीं समजवानी वात ए छे के केटलाक फल भगवान साक्षात स्वरुप थी आपे छे, ज्यारे केटलाक फल विभुति स्वरुप थी आपे छे. विभुति नुं भजन पण भगवान नुं ज भजन छे, परंतु नियत जेवी कामना होय अने तदनुसार जे साधना करीए ते कामना ना नियामक देव द्वारा भगवान तेनुं फल आपे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्रीश्या.म.जी)

"पुष्टि सिद्धांत - चिंतन" (३२)

****

शुद्धाद्वैत सिद्धांत प्रमाणे सच्चिदानंद स्वरूप ब्रह्मे ज विविध नाम-रुप धारण करेला छे. तदर्थ तेमनेज परमात्मा-भगवान नामथी जुदा जुदा संदर्भ मां कहेवामां आव्या छे, अने ते विभिन्न नामोथी श्रीकृष्ण नोज संकेत होवानुं श्रुति, गीता तथा भागवत ना प्रमाणो थी समजाय छे. तदनुसार श्रीमहाप्रभुजी 'कृष्ण' ने चक्रवर्ती सम् सर्वसामर्थ्यवान सर्वोपरि तत्त्व होवानुं समजावे छे.

भागवत मां वर्णित चोविस अवतारो पण विविध प्रयोजनथी श्रीकृष्णे ज धारण करेला अवतारो होवानुं प्रमाण पण तेनाज वचन - "एते चांश कला पुंश: कृष्णस्तु भगवान स्वयं" थी मले छे. ते विविध अवतारो भगवानना विभुति रुप होवाथी तद् तद् रुपनी साधना मुजब तेमनी आराधना करनारनी कामना अनुसार तेमना द्वारा करवामां आवता कर्मनुं नियत फल ते ते देवता द्वारा भगवान आपे छे.

केटलाक कर्म मनुष्य ने संसारमां फंसावे छे, तो केटलाक देवोनी आराधना रुप कर्म ते कर्मना नियत फल प्रमाणे भगवान ते विभुति द्वारा अपावे छे. परंतु तेओ स्वयं तो सर्वसामर्थ्ययुक्त होवाथी 'सर्वफलदाता' छे. तदर्थ श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के तेमनी भक्ति कोई क्षुद्र कामनानी पूर्ती माटे न करवी जोईए. जेवीरीते कोई साधारण कार्य माटे, जे कोई निम्न कक्षानो अधिकारी करी शकतो होय, तेने माटे प्रधानमंत्रीनो संपर्क साधवा बराबर गणाय.

तेथीज जो आपणुं लक्ष स्वयं भगवान ने मेलववानुं होय, जेम श्रीमहाप्रभुजी कहे छे, "भगवानेव फलम्", तो ते सामर्थ्य अन्य विभुति स्वरुपनुं न होई शके. तदर्थ स्वयं भगवान नीज निष्काम भावथी भक्ति करवी आवश्यक गणाय, अर्थात् कृष्ण नुं भजन मात्र कृष्ण ने प्राप्त करवा मापे ज करवुं जोईए, कोई क्षुल्लक कामना नी पूर्ती माटे नहीं.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्री श्या.म.जी)

पुष्टि सिद्धांत - चिंतन" (३३)

****

आम ज्यारे श्रीमहामप्रभुजी "कृष्ण" स्वरुपनी चक्रवर्ती वत सर्वोपरिता - सर्वोच्चता प्रमाण - प्रमेय - साधन - फल' एम चारेय दृष्टिकोण थी सिद्ध करीनै बताने छे, त्यारे तेमनी आज्ञा - "कृष्ण सेवा सदा कार्या" (सिं.मु), "सर्वदा सर्व भावेन भजनीय व्रजाधिप:" (च.श्लो.) वगेरे नुं तात्यर्य आसानीथी समजी शकाय छे. पुष्टिजीवनुं अथवा तेना जीवन नुं तात्यर्य जो 'कृष्ण' होवुं घंटे, जो कृष्णने मेलववा एज अंतिम लक्ष होय

तो! कृष्ण नी प्राप्तिने आपणुं छेल्लुं सोपान बनाविये तोज भगवाने जे हेतु थी पुष्टिजीवने जे उत्पन्न कर्या छे ते सार्थक थाय. आ चारेय दृष्टिकोण धी कृष्ण नी एकरुपता समजीए त्यारे श्रीगुसांईजी कृष्ण ने 'स्वत: पुरुषार्थ' बताने छे, तेनो मर्म सरलतापूर्वक जाणी शकाय. केटलो अद्भूत विचार छे ! 'कृष्ण' ने मेलववानुं माध्यम पण 'कष्ण' ! एज साधन अने एज फल ! कृष्ण नी साधन रुपा तनुवित्तजा सेवाज अंततोगत्वा फलरुपा मानसी मां परिणमित थई जाय. माटेज श्रीमहाप्रभुजी कृष्ण ने 'अद्भुत कर्मा' कहे छे. भगवान श्रीकृष्ण तेथीज गीताजीमां अर्जुनने अनेक ठेकाणे कहे छे - "तुं मने ज भज, मारामां ज तारुं चित्त राख, केवल मारे जाने शरणे आव" वगेरे. वचनो थी हकिकतमां तो श्रीमहाप्रभुजीना अनन्यता पूर्वक कृष्ण भजननों आग्रह ज अभिव्यक्त थतो जणाय छे.

भागवत मां पण त्रिजा स्कंधमां कपिल भगवान देवहूति ने भक्तियोग समजावतां कहे छे के गंगाजीना जलप्रवाहनी सागर तरफ निरंतर गति जेवी भक्तना मननी गति अतुटपणे निर्हेतु, विना कोई कामना कृष्ण तरफ वहेती रहे, ते तेमनी निर्गुण भक्ति छे जे कृष्ण ने प्राप्त करावे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि सिद्धांत - चिंतन" (३४)

****

श्रीमहाप्रभुजी ज्यारे 'कृष्ण' नी सर्वौपरिता सिद्ध करी "कृष्ण सेवा सदा कार्या" ने 'स्वसिद्धांत' बतावी रह्या छे (सिं. मु.), त्यारे स्पष्टतया आपनों हेतु कृष्ण ने प्राप्त करवा माटे कृष्ण ने आत्मसात् करवानो निर्देश आपी रह्या छे. तेने माटे साधन रुप तनु-वित्तजा सेवा द्वारा पोतानी अहंता-ममता निवृत्त करी चित्तनी प्रवणता साथे 'मानसी' नी फलदशाए पहोंचवानो उपाय तेमणे बताव्यो छे. तदर्थ ज 'चतु:श्लोकी' ग्रंथमां पण एकमात्र व्रजाधिप ना भजन (सेवा ना अर्थमां) ने पुष्टिजीवो माटे तेओ 'स्वधर्म' तरीके प्रतिपादित करे छे. श्रीमहाप्रभुजीना मते कृष्ण ने कृष्णनी भक्ति द्वाराज प्राप्त करी शकाय छे, तेने माटे अन्य साधन कारगत निवडी शके नहीं. तेथीज आपश्रीए अन्य शास्त्रोक्त मार्गों करतां भक्तिमार्गनी श्रेष्ठता सिद्ध करी 'पुष्टिभक्तिमार्ग' नुं प्रवर्तन कर्युं छे.

'पुष्टि' अर्थात् 'कृपा' ए कृष्ण नुं सहज लक्षण (गुण) छे. जे जीवनुं भगवाने 'पुष्टिजीव' तरीके वरण कर्युं होय तेमनामां भक्ति नुं बीज तेमणे आरोपित करेलुं होय छे, जे सत्संग / सद्गुरु ना सानिध्यना कारणे अंकुरित थई उत्तरोत्तर पल्लवित थाय छे. हकिकतमां तो भगवद् कृपा ज पुष्टिजीवना हृदयमां भक्तिनुं रुप धारण करी लेती होय छे. भगवद् कृपा जीवना कोई साधन पर निर्भर होती नथी. ते पुष्टिजीवमां 'बीजभाव' रुपे अस्तित्व धरावेज छे. आ वातनों खुलासों श्रीमहाप्रभुजीए 'भक्तिवर्धिनी' ग्रंथमां कर्यो छे, जेमां तेमणे बीजभाव दृढ़ करवाना उपाय बताव्या छे.

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के पुष्टिजीवमां रहेल भक्तिरुपी बीजभाव ज योग्य पोषण मलतां क्रमश: कृष्ण मां प्रेम, आसक्ति अने व्यसन दशा प्राप्त करावे छे. ज्यारे भगवद् अनुग्रह ने कारणे 'कृपा' भगवान तरफथी भक्त तरफ वहे छे, त्यारे तेने 'पुष्टि' कहेवाय छे, अने ज्यारे ते भक्तना हृदयमां परावर्तित थई भगवान तरफ वहे छे, त्यारे तेने 'पुष्टिभक्ति' कहेवाय छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि सिद्धांत - चिंतन" (३५)

****

श्रीगुसांईजीए "कृष्णसेवा सदा कार्या" नुं रहस्य समजावतां खुलासों क्यों छे के 'कृष्ण' स्वतः पुरुषार्थ छे. सामान्यतः कोई फल प्राप्त करवुं होय तो तेने माटे कशाक साधननुं अवलंबन लेवुं पडे. परंतु कृष्ण तत्त्व एवुं छे के ते साधन अने फल बन्ने छे. कृष्ण द्वारा ज कृष्ण प्राप्त थई शके छे ते तेनी विशेषता छे. प्रारंभमां करवामां आवती साधन रुप 'तनु-वित्तजा' सेवा ज ज्यारे आसक्ति अवस्था वटावी व्यसन दशामां आपणुं चित्त प्रभुमां प्रवण थई जाय त्यारे ते ज फल रुप 'मानसी' सेवानुं स्वरुप धारण करें छे. कृष्ण नी सेवा ए साधन, अनेक कृष्ण सेवा, एज फल. भगवान गीता मां पण अर्जुनने अनेक ठेकाणे आज्ञा करे छे के 'मने ज भज, मारामां ज चित्तवालो था, इत्यादि. अंतमां तो शरणागति उपदेश आपतां स्पष्टरुपे कहे छे - 'मामेकं शरणं व्रज', 'केवल मारे शरणे आव'. हकिकतमां भगवाननी आज्ञाओनो ज निर्देश श्रीमहाप्रभुजीए श्रीकृष्ण नी निर्गुण भक्ति ना रुपमां समजावी छे.

भागवत मां पण कपिल भगवान माता देवहूति ने भक्तियोग नो उपदेश आपतां कहे छे के जेवी रीते गंगाजी नो जल प्रवाह सतत् समुद्र तरफ वहे छे तेवी जो रीते अपमान मननी गति कोई प्रकारनी कामना रहित सहज रुपे कृष्ण मां निरंतर वहेवी जोईए, तेनेज 'निर्गुण भक्ति' कहेवाय.

"कृष्ण सेवा सदा कार्या" थी श्रीमहाप्रभुजीनुं तात्पर्य ए ज छे के आपणी प्रत्येक प्रवृत्ति नुं केंद्र बिंदु 'कृष्ण' होवा जोईए. आपणा जीवननो हेतु ज जो कृष्णमय थई जाय तो ज फल रुपे कृष्ण ना स्वरुपनो अनुभव प्राप्त थाय.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी) (संदर्भ - गो. श्रीश्या.म.जी)